श्रीजी ड्रैगन (ड्रैगन फ्रुट)

कैक्टस प्रजाति की यह फसल मुख्यतः मलेशिया, इंडोनिशया और ताइवान में पाई जाती है । इसे पिटाया, ब्रह्म कमल आदि नामों से भी जाना जाता है। एक एकड़ में 400 सीमेंट के पोल और एक पोल में 4 पौधे लगाये जाते है, इस प्रकार कुल 1600 पौधे / एकड़ आते है । प्रथम उत्पादन 1.5 साल बाद प्रति पोल 8-10 किलो का प्राप्त होने लगता है जो कि तृतीय वर्ष में बढ़कर 20-25 किलो हो जाता है ।

एक फसल में 12-15 वर्ष तक उत्पादन लिया जा सकता है । कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता नहीं होती । उच्च मुल्य की एक्ज़ोटिक फसल होने के कारण आंतरिक एवं अंर्तराष्ट्रीय बाजार में इस फल की अच्छी मांग तथा मुल्य है एवं इस फसल के साथ अंर्तवर्तिय फसलें ली जा सकती है ।

ड्रैगन फ्रुट के लाभ

- स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है ।
- 98% पानी की मात्रा के साथ वसा बिलकुल नही ।
- फाइबर, विटामिन, आयरन की अधिक मात्रा ।
- प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत बनाता है ।
- मांसपेशियों के समन्वय में सहायक ।

सीताफल

श्रीजी नर्सरी द्वारा कृषकों हेतु सीताफल की दो किस्म ग्राफ्टेड NMK गोल्ड एवं बालानगर उपलब्ध करवाई जाती है ।

सीताफल के पौधे 350 से 450 प्रति एकड़ लगते हैं जिनकी दूरी 8X15, 8X12 फीट होती है पौध रोपण पश्चात् 3 वर्ष में उत्पादन शुरू हो जाता है । लगाने का उपयुक्त समय जून से अक्टूबर तक है ।

एक पेड़ से औसतन 80-100 फल मिल जाते है । जब फल पेड़ पर कठोर हो जाए तब उसे तोड़ लेना चाहिए । ज्यादा दिनों तक पेड़ पर फल लगे रहने से वो सख्त हो कर फट जाते है । सामान्य रुप से पेड़ो से फलों को तोड़ने के 6 - 9 दिनों तक पक जाते हैं ।

सीताफल की खेती से लाभ

- अन्य फसलों की अपेक्षा कम कीटनाशक का प्रयोग होता है ।
- एक बार फसल लगाने के पश्चात् अनेक वर्षो तक उत्पादन प्राप्त होता है ।
- सभी प्रकार की मिट्टी में उपयुक्त ।
- व्यवसायिक खेती हेतु लाभदायक फसल ।
- फूड एवं प्रोसेसिंग इण्डस्ट्री में लगातार मांग बढ़ रही है ।

सीडलेस नींबू

नींबू का बगीचा लगाने के लिए 10X10 फीट की दूरी पर 60X60 से.मी. का गड्ढा करके गोबर खाद एवं रासायनिक खाद का उपयुक्त मिश्रण कर जून-जूलाई में पौध रोपण करना चाहिए । प्रति एकड़ 450 पौधे लगाये जाते है । **श्रीजी नर्सरी** द्वारा प्रदाय सिडलेस नींबू में 1 वर्ष पश्चात उत्पादन प्रारंभ हो जाता है । एवं वर्ष भर उत्पादित होते रहता है । प्रतिवर्ष प्रतिपौधे में 600 से 1000 नींबू का उत्पादन होता है । अतः यह किसानों के लिए लाभदायक फसल है ।

नींबू की खेती से लाभ

- एक बार नींबू का पेड़ लगाने से यह करीबन 20 वर्षो तक फल दे सकता हैं ।
- इस फसल के साथ अंर्तवर्तिय फसलें ली जा सकती है ।
- वर्षभर निरंतर फसल प्राप्त होती है । जिससे कृषक की निश्चित आमदनी बनी रहती है ।

ग्राफ्टेड वेजीटेबल सीडलींग

श्रीजी नर्सरी द्वारा अत्यंत ही कुशल कर्मचारीयों द्वारा ग्राफ्टेड सब्जियों के पौध तैयार किए जाते है । जिसमें मुख्तः बैंगन, टमाटर, शिमला मिर्च, तरबूज, खरबूज एवं अन्य फसलें है, छत्तीसगढ़ में अनेक जिलों में कृषकों को **श्रीजी नर्सरी** द्वारा तैयार पौध लगाकर उत्पादन के साथ-साथ लाभ में वृद्धि की गई हैं । **श्रीजी नर्सरी** द्वारा तैयार ग्राफ्टेड सब्जियों के पौधों हेतु रूट स्टाक का चयन अनेक प्रकार के ट्रायल पश्चात किया गया है जिसके कारण कृषकों के खेतों में अत्यंत उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए है ।

ग्राफ्टेड वेजीटेबल सींडलींग के लाभ

- मृदाजनित रोग जैसे विल्ट, निमेटोड के प्रति अत्यधिक सहनशील ।
- प्रति एकड़ कम पौध संख्या में अत्यधिक उत्पादन ।
- मौसम में बदलाव के प्रति सहनशील ।
- सामान्य हाईब्रीड से अधिक समय तक सब्जी उत्पादित होती है ।
- सब्जी की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी होती है जिससे बाजार में अधिक मुल्य प्राप्त होता है ।

नोट :-

उपरोक्त पौधों / कीटनाशक / फफूंदनाशक / खाद / मल्चिंग की आवश्यकता होने पर सम्पर्क करें ।

श्रीजी नर्सरी

फार्म - ग्राम चंगोरी, पाटन, जि. दुर्ग (छ.ग.)

सहयोगी संस्था :-

मितुल इन्टरप्राइजेस

विजेता कॉम्पलेक्स, शास्त्री मार्केट, मेन रोड, रायपुर (छ.ग.) फोन : 0771-4223551

मोबाईल : 70004-74615

E-mail : mitul51@yahoo.com

www.aadhya.biz #9827224467

Shreeji Nursery

श्रीजी नर्सरी

श्रीजी नर्सरी, विगत 10 वर्षों से किसानो की आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें उच्च गुणवत्ता के फल एवं सब्जी के पौध उपलब्ध कराती है इसके लिए स्वस्थ, रोगमुक्त, उन्नत किस्म के पौधे उपलब्ध कराने के लिए यहाँ कार्य करने वाले श्रमिकों को उच्च गुणवत्तायुक्त पौध तैयार करने का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त है।

"क्योंकि एक मजबूत शुरूवात सफलता की पहली सिढ़ी होती है"

इसी क्रम में स्वस्थ, उन्नत किस्म के पौधों की आपूर्ति के अपने प्रमुख उद्देश्य की पूर्ति हेतु विशेष चयनीत स्थान पर **श्रीजी नर्सरी** की स्थापना की गई है और यहाँ निम्न बातों का ध्यान रखा जाता है :-

- रोग मुक्त वातावरण उपलब्ध करने हेतु नर्सरी की स्थापना ऐसे स्थान पर की गई है जहाँ आस-पास अन्य फल सब्जियों की खेती नहीं होती ।
- फल पौध रोपने हेतु ई.सी. / पी.एच. बैलेंस्ड, स्टर्लाइज्ड व न्युट्रीएंट फोर्टीफाईड, कोकोपिट एवं प्लास्टिक सीडलिंग ट्रे का प्रयोग किया जाता है जिससे पौधों में मृदाजन्य रोग होने की संभावना खत्म हो जाती है ।
- फलदार पौधों के लिए विशेष रूप से चयनित वर्जिन सॉइल एवं गोबर खाद का उपयोग उपचार करके किया जाता है ।
- पौधों को कीटों से सुरक्षित रखने के लिए आधुनिक नेट हाऊस के अन्दर उन्हें तैयार किया जाता है ।
- आधुनिक तकनीक से तैयार इन पौधों की हार्डेनिंग की जाती है जिससे खेतों में मृत्युदर कम हो जाती है ।
- सभी प्रकार की सब्जियों की ग्राफ्टींग प्रशिक्षीत कर्मचारियों द्वारा की जाती है ।
- ग्राफ्टींग हेतु रूट स्टाक, **श्रीजी नर्सरी** द्वारा अनेक प्रकार के ट्रायल कर चयन किया जाता है परिणाम स्वरूप ग्राफ्टेड पौधों का कृषकों के खेत में उत्साहजनक परिणाम प्राप्त होता हैं ।

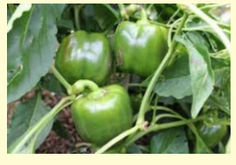

के. जी. ग्वावा (अमरूद)

छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक पसंद किये जाने वाले फल अमरुद की नई ग्राफ्टेड़ किस्म जो कि आकार में देशी किस्म की तुलना में काफी बड़ी है । प्रत्येक फल 400 ग्राम से लेकर 1 किलो का, अपेक्षाकृत अधिक रसदार एवं गुदेदार, कम बीज, अधिक भण्डारण क्षमता वाला और स्वादिष्ट होता है ।

के.जी. ग्वावा (अमरूद) की खेती से लाभ

- स्वादिष्ट एवं आकर्षक फल ।
- 400 ग्राम से 1 किलो तक के फल ।
- अन्य अमरूद की तुलना में फल की अधिक कीमत ।
- लंबी दूरी में भेजने हेतु उपयुक्त ।
- अत्यधिक लाभदायक फसल ।
- 8 से 10 वर्षो तक उपयुक्त ।
- अन्य कीस्मों की अपेक्षा उत्पादन पहले प्रारंभ ।

अमरूद का प्लान्टेशन

जून से अगस्त एवं अक्टूबर से नवम्बर तक प्लांटिंग की जाती है। 16 फीट X 8 फीट की दूरी (340 पौध / एकड़), 12 फीट X 8 फीट (450 पौध प्रति एकड़), 10 फीट X 8 फीट (550 पौध प्रति एकड़), 8 फीट X 8 फीट (680 पौध प्रति एकड़) पर प्लांटिंग की जानी होती है । प्लांटिंग के 2 वर्ष तक उत्पादन न लेकर तृतीय वर्ष में प्रति पौध 20-30 फल लिए जाते है। प्रतिवर्ष उत्पादन में वृद्धि होती है । मुख्यतः विल्ट, फल छेदक, मिलिबग, अन्थ्रेक्नोस से सुरक्षित रखने हेतु संक्रमण दिखाई देने पर ही कीटनाशक एवं फफूंदनाशक का छिडकाव करें ।

पपीता रेड लेडी 786

लगभग हर श्रेणी और वर्ग के लोगों को पसंद आने वाले इस फल की सार्वधिक प्रचलित किस्म नोन यू सीड्स, ताइवान द्वारा उत्पादित रेड लेडी 786 मानी जाती है । **श्रीजी नर्सरी** में कई प्रकार के जीवाणु कल्चर एवं उपचारित मृदा व गोबर खाद के संतुलित मिश्रण एवं कोकोपीट बैग के उपयोग से संरक्षित क्षेत्र में नर्सरी तैयार की जाती है ।

अनुकुल समय

अप्रैल, मई, जून और जुलाई पपीते की खेती के लिए सबसे अनुकुल समय हैं । फसल को रस चूसक कीटों से सर्वाधिक क्षति की संभावना होती है अतः इनसे सुरक्षा आवश्यक है। पपीते की खेती हेतु सभी प्रकार की मिट्टी उपयुक्त है किंतु पानी का भराव ना हो इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए । प्रति पौधा 8X8, 8X7, 9X7 फीट की दूरी पर लगाया जाता है ।

प्रत्येक पौधा 35 से 70 किलो तक फल देता है । अतः अधिक उत्पादन हेतु समय-समय पर्याप्त खाद देना आवश्यक है । गोबर खाद के प्रयोग से लाभ होता है ।

पपीते की खेती से लाभ

- अन्य फसलों की अपेक्षा निश्चित अधिक आमदनी ।
- कम श्रमिकों की आवश्यकता ।
- अधिक उत्पादन, खाने में स्वादिष्ट ।
- सभी राज्यों में अच्छी मांग ।
- एक बार पौध रोपण पश्चात 6 से 9 माह तक उत्पादन प्राप्त होता रहता है ।

एप्पल बेर

यह एक ग्राफ्टेड पौधा है । पारंपरिक बेर के फलों की संकर किस्म, दिखने में सेब की तरह और आकर्षक जबकि स्वाद बेर की तरह होता है । 3 मीटर X 5 मीटर की दूरी पर प्रति एकड़ 266 पौधे आते है । प्रत्यारोपण के 8 महिने बाद ही उत्पादन आना प्रारंभ हो जाता है । नवम्बर से दिसम्बर माह में फल लगते है । प्रथम वर्ष में 10-12 किलो / पौधे उत्पादन प्राप्त होता है जो चतुर्थ वर्ष में बढ़ कर 35-40 किलो हो जाता है ।

पुष्पन के समय पौधे की कटाई छटाई और कीट एवं फफुंदनाशक के छिडकाव की आवश्यकता होती है । मुख्य रुप से पाउडरी मिल्डयू और फल छेदक के संक्रमण से सुरक्षित रखने की आवश्यकता होती है । प्रारंभ में प्रति माह सिंचाई तथा पौधे बड़े होने पर 10-15 दिन में एक बार सिंचाई की जानी है ।

एप्पल बेर के लाभ

- कम श्रमिकों की आवश्यकता ।
- स्वतः परागित होती है अतः उच्च गुणवत्तायुक्त फल प्राप्त होतेहै।
- रोग एवं कीटमुक्त फल प्रजाति ।
- कृषकों हेतु लाभदायक फसल ।
- फरवरी से जुन तक पानी की आवश्यकता नहीं होती ।
- इसकी खेती कम पानी वाले क्षेत्रों में किया जा सकता है ।